सुनो जी भैरव लाडिले, करजोर विनती करूं।
कृपा तुम्हारी चाहिए, मै ध्यान तुम्हारा ही धरूं।
मैं चरण छूता आपके, अर्जी मेरी सुन लीजिये।
मै हूँ मति का मन्द, मेरी कुछ मदद तो कीजिये।
महिमा तुम्हारी बहुत, कुछ थोडी सी मैं वर्णन करूं। सुनो जी।
करते सवारी स्वान की, चारों दिशा में राज्य है।
जितने भी भूत और प्रेत, सबके आप ही सरकार हैं।
हथियार है जो आपके, उनका मैं क्या वर्णन करूं।
माता जी के सामने तुम, नृत्य भी करते सदा।
गा गा के गुण अनुराग से, उनको रिझाते हो सदा।
एक सांकली है आपकी, तारीफ उसकी क्या करूं। सुनो जी ।
बहुत सी महिमा तुम्हारी, मेहन्दीपुर सरनाम हैं।
आते जगत के यात्री, बजरंग का स्थान है।
श्री प्रेतराज सरकार के, मैं शीश चरणों में धरूं। सुनो जी ।
निशदिन तुम्हारे खेल से, माताजी खुश होती रहे।
सिर पर तुम्हारे हाथ रख कर, आशिर्वाद लेती रहे।
कर जाड कर विनती करूं, अरू शीश चरणों में धरूं। सुनो जी।